ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v7.i11.2019.3748

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Arts

चित्रकार विष्णु चिंचालकर का कला संसार

रश्मि जोशी [1], असलम खान [2]

[1] विभागाध्यक्ष चित्रकला विभाग, सरोजिनी नायडू शा. कन्या स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय शिवाजी नगर, भोपाल म. प्र.

[2] शोधार्थी, सरोजिनी नायडू शा. कन्या स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय शिवाजी नगर, भोपाल म. प्र.

शोध-सारांश

भारतीय कला क्षेत्र में श्री विष्णु चिंचालकर एक ऐसा नाम है, जिन्होंने न केवल जीवन को वरन जगत को भी कला का सघन माध्यम समझा। प्रकृति को अपना गुरु मानने वाले श्री चिंचालकर की कृतियां उनके अनकहे सत्य की वाणी है। वस्तु और सत्य को कला के माध्यम से अभिव्यकरना उनकी कला का आदर्श है। अपनी कला दृष्टि से वे कला के नये मूल्यों की तलाश करते रहे हैं। अपनी कला दृष्टि से वे कहां के नए मूल्यों की तलाश करते रहे। इसी कारण उनके चित्र जीवन को सत्य से और सत्य को आत्म पक्ष से जोडने का सशमाध्यम है। आपने आम आदमी तक चित्रकारिता का सरल सुगम स्वरूप पहुंचाने की कोशिश की है। विष्णु चिंचालकर इंदौर ही नहीं, मप्र ही नहीं वरन् विश्व के प्रमुख कलाकारों में अपना स्थान रखते हैं।

मुख्य शब्द – चित्रकार, विष्णु चिंचालकर, कला संसार

Cite This Article: रश्मि जोशी, असलम खान. (2019). "चित्रकार विष्णु चिंचालकर का कला संसार." *International Journal of Research - Granthaalayah*, 7(11SE), 261-264. https://doi.org/10.5281/zenodo.3592638.

" एम. एफ. हुसैन ने कहा था कि उनकी गहरी रेखायें विष्णु चिंचालकर की देन हैं। चिंचालकर को लोग गुरुजी के नाम से भी जानते हैं। हुसैन, बैन्द्रे और देवलालीकर तीनों ही जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स में गुरुजी के सीनियर रहे हैं। अपनी कला से दौलत और शोहरत के शिखर को छूने की बजाए गुरुजी प्रकृति की ओर मुड़ गए। सरलता ही उनकी विशिष्ठता रही है। उनकी ऊंगलियों की दिव्यता से आस-पास की वस्तुओं जैसे तार-प्लग में बारहसिंगा, चप्पल में मोनालिसा, जाम में टैगोर, बनियान में ईसा-मसीह से साक्षात होता है। पेड़ की छाल, पत्तियों, फली, बीज, टहनियां, टूटी लकडियां, भुट्टों से बनाई गई कलाकृति उन्हें पिकासों के समकक्ष बनाती है" (प्रभु जोशी)।

भारतीय चित्रकला में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद निरंतर विकास हो रहा था। तभी विष्णु चिंचालकर रंगों और केनवास की दुनिया से बाहर पलायन कर गए। वहां जहां जीवन से परित्य वस्तुओं की आकृतियों को आत्मा प्रदान करने एवं एक अकल्पनीय छवि खोजने की इच्छा छुपी बैठी थी। आपके हाथों का जादुई स्पर्श पाकर कई परित्यक्त चीजें एक नई काया को प्राप्त होने लगी। कला के क्षेत्र में परम्परागत माध्यम को चुनौती देकर

उसकी जगह पर नवाचार करना वाकई बहुत कठिन कार्य होता है। विष्णु चिंचालकर ने यह कार्य न केवल किया, बल्कि उसे सार्थकता तक भी पहुंचाया।

हर मौलिक और प्रयोगधर्मी कलाकार के भीतर एक जादुई भाषा रचने का मोह घुमड़ता रहता है, क्योंकि एक सूक्ष्म-विस्मय की प्रतीति कराना कला का अंतर्निहित स्वभाव है। चिंचालकरजी में यह सहनव्यक्तित्व था। लेकिन उसे सहजता को उन्होंने एक लम्बे और श्रम साध्य रास्ते में बहुत कुछ चुकाकर अर्जित किया था। आज यह सोचकर ही आश्चर्य होता है कि उन्होंने 40-45 बरस पहले वह काम कर दिखाया था। जिसे सदी के अंत में इंस्टालेशन के नाम पर समकालीन कलाकार आज कर रहे हैं। श्री विष्णु चिंचालकर ने अपने चित्रों में अमूर्त चित्रण के विभिन्न आयामों को प्रयोग में लाकर भारतीय चित्रकला में अपना एवं विशेष स्थान बनाया है।

श्री विष्णु चिंचालकर का जन्म 5 सितंबर 1917 ईस्वी को आलोट में श्री दिनकर पंत के यहां हुआ था। आपकी प्रारंभिक शिक्षा देवास में संपन्न हुई। मैट्रिक पास करने के पश्चात देवास की एक शाला में 11 माह तक शिक्षक के रूप में कार्यरत रहे कुछ वर्षों के पश्चात पदोन्नत होकर प्रधानाध्यापक हो गए। विष्णु चिंचालकर बचपन से ही स्व प्रेरणा से चित्र बनाने लगे थे। भोजन और शयन जैसा ही सहज था उनका रेखाओं का अंकन। सन 1935 में चित्रकला महाविद्यालय में डीडी देवलालीकर के मार्गदर्शन में चित्रकला का अध्ययन शुरू किया। सन 1941 ईस्वी में सर जेजे स्कूल आफ आर्ट मुंबई से जीडी आर्ट परीक्षा उत्तीर्ण कर ली। सन 1943 ईस्वी से 1950 ईस्वी के अंतराल में चिंचालकर जी ने दिल्ली मुंबई और कोलकाता में हुई। अखिल भारतीय प्रदर्शनों में भाग लेकर दिल्ली की अंतर्राष्ट्रीय चित्र प्रदर्शनी में प्रशस्ति पत्र और पुरस्कार प्राप्त किए 55-50 के दशक में श्री चिंचालकर ने इंदौर चित्रकला महाविद्यालय में अध्ययन कार्य किया तभी से उन्हें श्गुरुजीय के नाम से पुकारा जाने लगा। प्रोफेसर एनएस बैन्द्रे ने उन्हें अपने विख्यात कला संकाय में शिक्षक बनने के लिए बड़ौदा ललित कला महाविद्यालय में आमंत्रित किया, पर वे बड़ौदा नहीं गए।

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3592638

इंदौर का चित्र कला मंदिर जो बाद में ललित कला संस्थान बना उसी में श्री चिंचालकर ने पढ़ाया। किसी कारणवश उन्होंने यह कार्य छोड़ दिया और स्वतंत्र रूप से कार्य करने लगे। वह सभी पोट्रेट चित्रांकन करते थे, मंच सज्जा करते थे, वह प्रदेश के सुप्रसिद्ध समाचार पत्र नई दुनिया में रेलवे स्टेशन का कार्य करते थे। डायल स्ट्रेटेड वीकली ऑफ इंडिया के तत्कालीन संपादक श्री माइकल ब्राउन चिंचालकर जी के कार्य से बहुत प्रभावित थे और मुंबई के स्थानीय कलाकार ना होने के बावजूद भी चिंचालकर जी से ही इलस्ट्रेशन का कार्य करवाते थे। नईदुनिया इंदौर में आप स्केच ड्राइंग ग्राफिक्स बनाते थे तथा जन-जन तक अपनी कला पहुंचाते थे।

आपका इलस्ट्रेशन इतना प्रभावशाली होता था कि पाठक कहानी को पढने के पूर्व मात्र चित्र देखकर ही उसका सारांश समझ लेता था। आप को बच्चों से बहुत लगाव था। इसी वजह से भी बच्चों के प्रत्येक कार्यक्रम में जहां उन्हें आमंत्रित किया जाता था कठिन परिस्थितियां होने के बाद भी जरूर शिरकत करते थे। सन् 1982 में एक कार्यक्रम में इटारसी के समीप केसला ग्राम में आदिवासी सम्मेलन में गुरु के सानिध्य का अवसर मिला। बहुत साधारण सी वेशभूषा खादी का कुर्ता, साइड में कपड़े का बैग, पांव में साधारण चप्पल, साधारण चश्मा, पर अप्रतिम व्यक्तित्व थोड़ी ही देर में बच्चों से ऐसे घुल-मिल गए कि जैसे बरसों से उन्हें जानते हों। बच्चों ने भी गुरुजी के सानिध्य का आनंद लिया। जहां पर आपने नारियल की नरेटी से बना हुआ बंदर और अन्य सामग्री का प्रदर्शन किया।

वे कहते थे कि बालक जिज्ञासु प्रवृत्ति का होता है, निरंतर में कुछ ना कुछ सीखता रहता है। वह खुद करके सीखता है, सुनकर, देखकर और स्पर्श करके सीखता है। खेलना बालक की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है और वह खेल-खेल में व्यस्त होते ही सीखता जाता है। समकालीन कला से जोडने वाले मध्यप्रदेश के कला संगठन फ्राइडे ग्रुप नाम के कलाकार संगठन के गुरुजी संस्थापक सदस्य रहे। उन्होंने बच्चों को आरंभिक अक्षर ज्ञान देने के अलावा बाल सुलभ, अनोखी चाक्षुस विधि अस्वीकृत की थी। भारत भवन भोपाल में रूपंकर प्रकोष्ठ के सलाहकार मंडल में सदस्य रहे। 1945 से 1955 के बीच आपने अनेक प्रदर्शनों में हिस्सा लिया और पुरस्कार प्राप्त किए। कोलकाता आर्ट एकेडमी से फैलोशिप और स्वर्ण पदक, आईफेक्स नई दिल्ली में आयोजित प्रथम अंतर्राष्ट्रीय समकालीन कला प्रदर्शनी के भारतीय खंड में पुरस्कार एवं कई प्रतिष्ठित संस्थानों से पुरस्कार। दूरदर्शन पर प्रदर्शन के लिए उनके दो महत्वपूर्ण साक्षात्कार रिकार्ड किए गए।

वर्ष 1970 व 1977 में मुंबई में 1972 में दिल्ली में 1979 में कोलकाता और 1981 में मध्यप्रदेश कला परिषद द्वारा पुनरावलोकन नाम से भोपाल में एक बड़ी कला प्रदर्शनी लगी। वहीं कला परिषद के ही आयोजन संभागीय उत्सव 1984 में उज्जैन में चिंचालकर जी की एकल प्रदर्शनी आयोजित हुई। 1984 में ही शिखर सम्मान के अवसर पर भारत भवन में दिनांक 14 से 18 फरवरी तक उनकी सिंहावलोकी प्रदर्शनी आयोजित की गई। उत्सव 73 के अवसर पर मध्यप्रदेश शासन द्वारा सम्मान 1979 में एफआईई इचल करंजी पुरस्कार से सम्मानित, 83 वर्ष की उम्र में रविवार 30 जुलाई 2000 को कला जगत को कई नई सौगात देने वाले श्री विष्णु चिंचालकर जी सृष्टि के चितेरे के बुलावे पर इस संसार से दिव्य संसार की ओर रवाना हो गए।

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3592638

संदर्भ

[1] समावर्तन (मासिक पत्रिका वर्ष 03 अंक 07 पूर्णांक 31 अक्टूबर 2010) पृष्ठ 70, प्रभुजोशी-''कैसा हैं विष्णु पद को प्राप्त करना''।
[2] समावर्तन (मासिक पत्रिका वर्ष 03 अंक 07 पूर्णांक 31 अक्टूबर 2010) पृष्ठ 74, आलेख वसंत पोतदार-''पुनरावलोकन विष्णु चिंचालकर की कलाकृतियों की एकल प्रदर्शनी।
[3] कला समय - त्रैमासिक पत्रिका अगस्त 2000 से मार्च 2001 सम्पादकीय पृष्ठ 01, से 23 तक चिंचालकर जी की कला शैली एवं व्यक्तित्व पर लेख। प्रकाशक - भंवरलाल श्रीवास,
[4] संपादक -विनय उपाध्याय, भोपाल।
[5] अनौपचारिका, (मासिक पत्रिका वर्ष 44, अंक 02, फरवरी 2018) आलेख खेल- खेल में शिक्षा। प्रकाशक राजगढ़ प्रौढ़ शिक्षण समिति द्वारा कुमार एण्ड कंपनी जयपुर से मुद्रित तथा झालना संस्थान क्षेत्र जयपुर से प्रकाशित, संपादक रमेश थानजी, सातवा संस्करण वर्ष 2007।